भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

तारांकित प्रश्न संख्या : *214

उत्तर देने की तारीख : 08 जुलाई, 2019

सांस्कृतिक विरासतों का संरक्षण

***214. डॉ॰ आलोक कुमार सुमन :**
श्री सुमेधानन्द सरस्वती :

क्या **संस्कृति मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने देश की सभी प्रकार की लोक कला और सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण तथा उन्हें अच्छी स्थिति में बनाए रखने के लिए उपाय किए हैं;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) ज्ञान के भंडार को भावी पीढ़ी के लिए समुचित रूप से संजोए रखने हेतु क्या उपाय किए जा रहे हैं;

(घ) क्या सरकार ने बिहार की सांस्कृतिक विरासत, विशेषकर मधुबनी लोक चित्रकला और लोक नृत्य को संरक्षित रखने के लिए पर्याप्त कदम उठाए हैं; और

(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

(श्री प्रहलाद सिंह पटेल)

संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(क) से (ङ) : विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

दिनांक 08 जुलाई, 2019 को पूछे गए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *214 के भाग (क) से (ङ) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क) और (ख) : देश की लोक कला के सभी रूपों और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, परिरक्षण और प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार द्वारा सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों (जेडसीसी) की स्थापना की गई है जिनके मुख्यालय पटियाला, नागपुर, उदयपुर, प्रयागराज, कोलकाता, दीमापुर और तंजावुर में स्थित हैं, जो संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन स्वायत्त संगठन हैं। इन जेडसीसी द्वारा लोक कला के सभी रूपों के परिरक्षण के लिए पूरे देश में नियमित आधार पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलाप और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

(ग) : इन जेडसीसी द्वारा भावी पीढ़ी के लिए ज्ञान कोष के समुचित रखरखाव के लिए लुप्त प्राय कला रूपों सहित विभिन्न कला रूपों का प्रलेखन किया जाता है। सभी जेडसीसी द्वारा 31 मार्च, 2019 तक 894 कला रूपों को श्रव्य, दृश्य और साहित्यिक रूप में प्रलेखित किया गया है। पहले प्रलेखित किए गए कई लुप्त हो रहे कला रूपों को परिरक्षण हेतु डिजिटल प्रारूप में परिवर्तित किया जा रहा है क्योंकि पुराने प्रारूप का अब प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

घ) और (ङ) : बिहार, पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (ईजेडसीसी), कोलकाता और उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (एनसीजेडसीसी), प्रयागराज का सदस्य राज्य है। ईजेडसीसी कोलकाता ने विगत दो वर्षों में वयस्कों और स्कूली बच्चों के लिए 26 से 30 दिसम्बर, 2017 तक जीतवारपुर, मधुबनी में, 10 से 16 दिसम्बर, 2018 तक इन्द्रधनुष उत्सव, पटना में और 21 से 30 दिसम्बर, 2018 तक मधुबनी जिले में बिहार के विभिन्न भागों के बच्चों के लिए मधुबनी चित्रकला पर गहन कार्यशालाएं आयोजित की हैं।

बिहार के कम ज्ञात दृश्य कला रूपों यथा तिकुली कला, मंजुषा कला, भोजपुरी कला आदि, विभिन्न नृत्य रूपों यथा करमा, कजरी, झिझिया, मुखौटा, भोजपुरी, झूमर, मगही झूमर को भी ईजेडसीसी, कोलकाता द्वारा देश भर में संवर्धित किया गया है। इसमें राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न नृत्य महोत्सवों में इन नृत्य रूपों के विशेषज्ञ कलाकारों को शामिल किया गया है।

मधुबनी लोक चित्रकला और इसके कलाकारों को एनसीजेडसीसी, प्रयागराज द्वारा दिल्ली में (अगस्त, 2018) और पटना में (अक्तूबर, 2018) आयोजित अतुल्य भारत जैसे कार्यक्रमों में बढ़ावा दिया गया है। एनसीजेडसीसी परिसर में अक्तूबर, 2018 के दौरान एक मधुबनी चित्रकला कार्यशाला आयोजित की गई थी। उपर्युक्त के अलावा, एनसीजेडसीसी, प्रयागराज द्वारा कुम्भ मेला-2019 के दौरान मधुबनी लोक चित्रकला पर 30 कलाकारों की कार्यशाला आयोजित की गई है जिसमें गंगा के उद्गम स्थल (गंगोत्री) से गंगा के अंतिम बिन्दु (गंगा सागर) तक का दृश्य चित्रित करते हुए "गंगा अवतरण" नामक एक बड़ा चित्र बनाया गया था।

गुरु-शिष्य परंपरा स्कीम के अंतर्गत, शिष्यों को विशेषज्ञता प्राप्त गुरु के द्वारा नालंदा, बिहार में लोक गीत/लोक नाट्य में प्रशिक्षित किया जाता है।